SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

महाराजा सयाजीराव-तृतीय के शासनकाल में शास्त्रीय संगीत का विकास

JANAKKUMAR TRIBHUVANBHAI JASAKIYA[1] DR. ASHWINIKUMAR SINGH[2]

[1]Researcher, Dept. of Indian Classical Music (Vocal), Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara, Gujarat
[2]Assistant Professor, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara, Gujarat

सार

महाराजा सयाजीराव तृतीय के शासनकाल में शास्त्रीय संगीत का विकास बहुत महत्वपूर्ण रहा। वे १८७५ से १९३९ तक गायकवाड राज्य के महाराजा रहे और इस दौरान भारतीय कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई ठोस कदम उठाए। उनकी संगीत और कला के प्रति गहरी रुचि थी, जिससे उन्होंने शास्त्रीय संगीत की उन्नति के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किए।उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप बड़ौदा राज्य ने कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में पहचान बनाई। जिसने भारतीय संगीत और कला को एक नई दिशा दी। उनका दृष्टिकोण और प्रयास न केवल बड़ौदा राज्य बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणादायक है। यह लेख महाराजा सयाजीराव तृतीय के अतुलनीय योगदान को उजागर करता है I

बीज शब्द: *सयाजीराव गायकवाड़, बड़ौदा राज्य, भारतीय संगीत, गायनशाला*

प्रस्तावना

हिंदुस्तान के इतिहास में जहां एक ओर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से संघर्ष हुआ, वहीं दूसरी ओर अपनी समृद्ध कला और संस्कृति को बचाने और बढ़ावा देने के लिए भी एक लंबा संघर्ष चला। भारतीय कला और संस्कृति का संरक्षण न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक पहचान और धरोहर को जीवित रखने का एक प्रयास भी था। कलाकारों के लिए कला का अभ्यास न केवल उनकी आत्मा की अभिव्यक्ति था, बल्कि भारतीय सभ्यता की अमूल्य धरोहर को संरक्षित रखने का माध्यम भी था। इस संदर्भ में बड़ौदा राज्य ने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया, जहां कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए कई ठोस कदम उठाए गए। इस योगदान का श्रेय श्रीमंत महाराजा सयाजीराव तृतीय (१८६३-१९३९) को जाता है, जिनके शासनकाल में बड़ौदा राज्य भारतीय कला और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र बन गया। महाराजा सयाजीराव तृतीय ने १८७५ से १९३९ तक गायकवाड राज्य के महाराजा के रूप में शासन किया, और इस दौरान उन्होंने भारतीय कला, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, इत्यादि के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किए। उनकी कला और संगीत के प्रति गहरी रुचि ने उन्हें इस दिशा में कई ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। उनके शासनकाल में बड़ौदा राज्य न केवल शास्त्रीय संगीत के उन्नति का केंद्र बना, बल्कि उन्होंने कला के विभिन्न रूपों को प्रोत्साहित करने के लिए कई संस्थाओं की स्थापना भी की। उनके दरबार में संगीतकारों, कलाकारों और अन्य सांस्कृतिक हस्तियों का सम्मान किया गया, और वे अपनी कला के प्रति अपनी निष्ठा और योगदान के लिए प्रसिद्ध रहे। उनके द्वारा किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप बड़ौदा राज्य ने कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहचान बनाई और भारतीय संगीत और कला को एक नई दिशा दी। महाराजा सयाजीराव तृतीय का दृष्टिकोण और प्रयास न केवल बड़ौदा राज्य, बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणादायक थे। उन्होंने कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह आज भी भारतीय समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में माना जाता है। उनके कार्यों ने यह सिद्ध किया कि कला और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन किसी भी राष्ट्र की आत्मा को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

महाराजा सयाजीराव (तृतीय) का कार्य एवं योगदान

आपका (मूल नाम: गोपालराव) जन्म (१८६३) नासिक के पास छोटे से गांव कव्लाना में एक चरवाहे के घर हुआ था I तत्कालीन महारानी जमनाबाई को पुत्ररत्न न होने की वजह से सयाजीराव को दत्तक लिया गया था (१८७५) I तत्पश्चात उनके लिए अनुशासन, तकनिकी, विज्ञान, अध्यात्म, शास्त्र एवं परंपराओं का अभ्यास शुरू करवा दिया गया और आगे चलके उन्हें सिर्फ १८ साल की उम्र में (१८८१) बड़ौदा राज्य की गद्दी सोंपी गयीI उनकी विशेष प्राथमिकताओं में स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना भी शामिल था। उन्होंने राज्य में अनेक पुस्तकालयों का निर्माण करवाया, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा दी।सयाजीराव का शासनकाल न केवल सामाजिक और आर्थिक सुधारों के लिए

महत्वपूर्ण था, बल्कि उन्होंने बड़ौदा राज्य को एक प्रगतिशील और समृद्ध क्षेत्र बनाने के लिए भी अनेक प्रयास किए। उनके दृष्टिकोण और सुधारों ने राज्य की शिक्षा और संस्कृति को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया, जिससे वे एक प्रेरणादायक शासक के रूप में जाने गए।

बड़ौदा राज्य का इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगीत और कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण घटनाओं का गवाह रहा है। एक विशेष प्रसंग के दौरान, जब महाराष्ट्र से एक विद्वान कीर्तनकार बड़ौदा आए, तब उन्होंने ९ वर्षीय एक बालक की अद्भुत प्रतिभा को देखा। इस बालक ने अपनी गायकी से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उसकी कला ने राज्य के युवा महाराजा को गहराई से प्रभावित किया, और उन्होंने निर्णय लिया कि अपने राज्य में ऐसी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

इस प्रेरणा के फलस्वरूप, २६ फरवरी १८८६ को "छोकराओ नी गायनशाला" (बच्चों की गायनशाला) का प्रारंभ हुआ और प्रोफेसर मौलाबख्श को प्रिंसीपाल के रूप में नियुक्त किया गया। यह भारत के इतिहास में एक अनोखी घटना थी, क्योंकि यह पहली बार था जब बच्चों के लिए एक विशेष गायनशाला की स्थापना की गई। इस गायनशाला ने न केवल बड़ौदा में, बल्कि डभोई, नवसारी, पाटन, अमरेली जैसे अन्य क्षेत्रों में भी शाखाएं खोलीं।

उस नन्हे बालक की शिक्षा का प्रबंध उस्ताद फैज मोहम्मद खान के मार्गदर्शन में किया गया। उस्ताद फैज मोहम्मद खान, जो ग्वालियर घराने के प्रमुख गायक थे, ने न केवल उस बालक को संगीत की बारीकियों से परिचित कराया, बल्कि उसकी प्रतिभा को भी निखारा। यह उल्लेखनीय है कि उस्ताद फैज मोहम्मद खान खुसरवी ख्याल के हिंदुस्तान के एकमात्र गवैये थे और संगीत सम्राट तानसेन के वंशज थे।

इस प्रक्रिया के दौरान, बालक की प्रतिभा और लगन ने उसे "देवगंधर्व गायनाचार्य पंडित भास्करबुवा बखले" के नाम से संगीत जगत में एक पहचान दिलाई। उनकी गायकी ने न केवल क्षेत्रीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त की।

"छोकराओ नी गायनशाला" ने भारतीय संगीत को एक नई दिशा दी। इस संस्थान ने कई बच्चों को संगीत की शिक्षा दी और उनकी प्रतिभाओं को संवारने का कार्य किया। संगीत की यह नई धारा केवल व्यक्तिगत प्रतिभा को नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से भारतीय संगीत की संस्कृति को भी सशक्त बनाने का काम कर रही थी।जिसके चलते बड़ौदा राज्य एक संगीत केंद्र के रूप में स्थापित हुआ।

इस तरह, बड़ौदा राज्य में एक साधारण घटना ने संगीत के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन ला दिया। नन्हे बालक की प्रतिभा और महाराजा की दृष्टि ने यह सुनिश्चित किया कि संगीत का यह माहोल भविष्य में भी जारी रहे।

संगीत के प्रति इस उत्साह और प्रेम ने बड़ौदा को न केवल एक ऐतिहासिक स्थल बनाया, बल्कि इसे कला और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र भी बना दिया। इस प्रेरणादायक कहानी से यह स्पष्ट होता है कि कैसे एक छोटे से बच्चे की प्रतिभा और एक युवा महाराजा की दूरदर्शिता ने भारतीय संगीत को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। प्रोफेसर मौला बख्श ने उत्साह के साथ गायन शाला का कार्यभार संभाला। वे खुद एक उत्कृष्ट वीणा वादक थे और उत्तर हिंदुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की दोनों पद्धतियों के ज्ञाता थे। उल्लेखनीय है कि "छोकराओ नी गायनशाला" के साथ उस्ताद फैज़ मोहम्मद खान ने भी एक संगीत विद्यालय खोला, लेकिन वे अनुशासन और मेहनत के आग्रही होने के कारण उनका स्कूल अधिक समय तक नहीं चल सका और बंद हो गया। मौला बख्श को पहले से प्रशासन का अनुभव था, जिससे "छोकराओ नी गायनशाला" में छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी और उनका संगीत शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। इस विद्यालय में बच्चों के लिए संगीत शिक्षण बिल्कुल मुफ्त था और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी दी जाती थी। उस समय संगीत शिक्षा के लिए कोई शास्त्र उपलब्ध नहीं था। मौला बख्श ने संगीत को एक संस्थागत शिक्षक प्रणाली में स्थापित करने के प्रयास किए और भारतीय संगीत के पाठ्य पुस्तकों का लेखन किया। इन पुस्तकों को संगीत पाठ्यक्रम में शामिल किया गया, पुरानी और पारंपरिक चीजों को स्वरलिपिबद्ध किया। इन पुस्तकों का प्रचार महाराष्ट्र में भी हुआ। इससे प्रेरित होकर उस्ताद फैज मोहम्मद ने भी स्वरलिपि बनाई, जिसका उपयोग गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में कुछ संगीतकारों ने किया। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से कई शिष्यों को तैयार किया। इस प्रकार बड़ौदा राज्य संगीत कला का केंद्र बन गया, जहां देश के अन्य हिस्सों से कई प्रसिद्ध संगीतज्ञ और विद्वान बड़ौदा संस्थान की ओर आकर्षित हुए, जिनमें उस्ताद अब्दुल करीम खान (किराना), उस्ताद अल्लादिया खान (जयपुर अतरौली), उस्ताद नत्थन खान (आगरा), पंडित विष्णु नारायण भातखंडे और पंडित विष्णु

दिगंबर पलुस्कर जैसे महान कलाकार शामिल थे। अन्य वादक कलाकारों में उस्ताद घसीट खान, नवाब वाजिद अली शाह के दरबार से बड़ौदा आए नासर खान पखावजी, आबिद हुसैन बिनकार, जमालुद्दीन बिनकार, गुलाब सागर (जलतरंग वादक), गणपतराव बर्वे, चिनप्पा केलवाड, पंडित गणपतराव वसईकर और शिवराम मनोहर आदि शामिल थे। इस तरह बड़ौदा राज्य संगीत कलाकारों और विभिन्न संगीत प्रवृत्तियों से व्यस्त हो गया, जो महाराजा सयाजीराव के कलाओं को मिलने वाले संरक्षण के कारण संभव हुआ। सभी कलाकारों और संगीत शाला को कलावंत कारखाना के अंतर्गत रखा गया।

सन १८९६ में मौला बख्श के निधन के बाद उनके पुत्र उस्ताद मुर्तुजाखान १९१९ तक गायन शाला के प्रिन्सिपाल रहे। उनके कार्यकाल में एक पाश्चात्य संगीतकार फ्रेडलिस को राज्य के बैंड का प्रबंधक नियुक्त किया गया। भारत के इतिहास में पहली बार बड़ौदा राज्य में भारतीय वाद्यों का समूह वादन सफलतापूर्वक किया गया, और संगीत स्कूल में नए-नए आयाम जुड़ते रहे।

हज़रत सूफी इनायत खान (१८८२-१९२७) भारतीय संगीत और अध्यात्म के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व रहे हैं। वे प्रो मौलाबख्श के पौत्र थे, जिनके साथ उन्होंने भारत में कई स्थानों की यात्रा की और संगीत की विविधताओं का अध्ययन किया। इनायत खान ने अपने अनुभवों और विचारों को साझा करते हुए कई संगीत पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं। उनके लगभग १६ (कुछ मतानुसार २२) रिकॉर्ड्स प्रकाशित हुए, जो उनकी संगीत क्षमता और रचनात्मकता को दर्शाते हैं। पंडित रविशंकर से कई दशकों पहले, इनायत खान ने भारतीय संगीत को पश्चिमी देशों में फैलाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। १९१० में, वे अपने भाइयों के साथ अमेरिका गए और बाद में यूरोप में भी अपने संगीत का प्रदर्शन किया। एक सूफी आध्यात्मिक गुरु के रूप में, इनायत खान ने भारतीय संगीत के माध्यम से प्रेम और विश्वबंधुत्व का संदेश फैलाया। उनके अनेक शिष्य आज भी अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप में उनके विचारों और संगीत को आगे बढ़ा रहे हैं। इनायत खान का योगदान न केवल संगीत के क्षेत्र में, बल्कि सांस्कृतिक संवाद में भी अनमोल है। उनकी विरासत आज भी जीवित है और संगीत तथा आध्यात्मिकता के प्रति उनकी दृष्टि आज की दुनिया में भी प्रासंगिक बनी हुई है। उनके काम ने भारतीय संगीत को वैश्विक मंच पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे वे भारतीय संगीत के एक अद्वितीय प्रतिनिधि बन गए हैं।

भारतीय संगीत के भीष्म पितामह पंडित विष्णु नारायण भातखंडे २०वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय संगीत के पुनरुद्धार हेतु भारत भ्रमण कर रहे थे । इस यात्रा में उन्हें महाराजा सयाजीराव का सक्रिय सहयोग मिला, जिन्होंने भारतीय संगीत को एक नया आयाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये वो समय था जब संगीत को एक शास्त्रीय आधार की आवश्यकता थी। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, महाराजा सयाजीराव की सहायता से १९१६ में भारतीय संगीत के इतिहास में पहली बार "अखिल भारतीय संगीत परिषद" का आयोजन किया गया। यह परिषद २० से २५ मार्च के बीच भातखंडे जी की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

यह महत्वपूर्ण परिषद आज के फैकेल्टी आफ परफॉर्मिंग आर्ट्स में हुई, जो कि विश्व प्रसिद्ध महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय का एक अहम हिस्सा है। इस परिषद के आयोजन की संपूर्ण आर्थिक सहायता महाराजा सयाजीराव ने प्रदान की। इस अवसर पर अखंड भारत के अनेक जाने-माने संगीतकार और शास्त्रकार उपस्थित थे, जिनमें डगुरबानी के प्रसिद्ध गायक उस्ताद अल्लाबंदे-जाकिरुद्दीन, उस्ताद गुलाम अब्बास खान, उनके पौत्र उस्ताद फ़ैयाज़ खान, उस्ताद अब्दुल करीम खान, पश्चिमी संगीतज्ञ क्लेमेंट्स और शास्त्रकार देवल शामिल थे।

इस परिषद में विद्वानों की उपस्थिति में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। रागों का प्रमाणीकरण, संगीत के इतिहास का दस्तावेजीकरण, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शास्त्र का नवीनीकरण, और राग रागिनियों के स्वरूप को सुनिश्चित करने के विषयों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। इसके अतिरिक्त, श्रुति और उसके सिद्धांत के विषय में भी चर्चा हुई।

इस सम्मेलन का परिणाम भारतीय संगीत को एक शास्त्र के रूप में मान्यता देने में महत्वपूर्ण रहा। यह संगीत शिक्षा में क्रांति का मुख्य स्रोत बना। इस सम्मेलन के फलस्वरूप, पंडित भातखंडे ने क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग १ से ६) और भारतीय संगीत शास्त्र (भाग १ से ४) की रचना की, जो संगीत जगत के लिए अनमोल धरोहर बन गई।

इन सभी संगीत के विद्वान मनीषियोको याद करें और आफ़ताब ए मौसिक़ी उस्ताद फैयाज़ खान को याद न करें तो बड़ौदा राज्य में संगीत का योगदान अधुरा रह जायेगा I ऊ फैयाज़ खान भारतीय संगीत के क्षेत्र में एक अत्यंत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली कलाकार माने जाते हैं। उनकी प्रतिभा और प्रसिद्धि के कारण, उस समय के कई नामी कलाकारों ने उनके शिष्यत्व को स्वीकार किया और बड़ौदा में बस गए। फैयाज़ खान की गायकी ने संगीत के शास्त्रीय स्वरूप को नया आयाम दिया, जिससे वे अपने समकालीन संगीतज्ञों में सर्वश्रेष्ठ माने जाने लगे।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने अपने शिष्य पं श्रीकृष्ण नारायण रातनजनकर को फैयाज़ खान के पास शिष्यवृत्ति दिलवाकर भेजा। पं रातनजनकर ने बाद में अपनी पहचान एक प्रमुख संगीतज्ञ के रूप में बनाई, जो फैयाज़ खान के मार्गदर्शन और भातखंडेजी की शिक्षाओं का परिणाम था।

फैयाज़ खान की गायकी की विशुद्धता और तकनीकी दक्षता ने उन्हें संगीत जगत में एक अनूठी पहचान दिलाई। उन्होंने पं भातखंडे को अपनी पुस्तकों के लिए अनेक बंदिशें सिखाईं, जो उनके संगीत के प्रति गहरे ज्ञान और समर्पण को दर्शाती हैं। भातखंडे जी ने इन बंदिशों का उल्लेख अपनी क्रमिक पुस्तकों में किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि फैयाज़ खान का योगदान भारतीय संगीत के शास्त्र के विकास में कितना महत्वपूर्ण था।

फैयाज़ खान की प्रस्तुतियाँ और उनकी तकनीकें संगीत के शास्त्रीय सिद्धांतों को मजबूत करने में सहायक रही। आप की गायकी रागों को अधिक प्रामाणिक और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में मदद की, जिससे भातखंडे जी ने फैयाज़ खान की गायकी को रागों के प्रमाणीकरण के लिए आधार माना। आज भी, ऊ फैयाज़ खान शताब्दी के श्रेष्ठतम कलाकारों में अग्रणी माने जाते हैं। उनकी कला ने न केवल अपने समकालीनों को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बनी। फैयाज़ खान का संगीत और शिक्षण भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ गया है, प्रतिष्ठित सामायिक इंडिया टुडे के अनुसार २०वीं शताब्दी के १०० सर्वश्रेष्ठ भारतीय व्यक्तियों में आपके नाम का समावेश होना एक गौरव की बात हैI

निष्कर्ष

महाराजा सयाजीराव का भारतीय कला और संस्कृति के प्रति जो योगदान रहा शायद उसीके कारण आज हम और आप संगीत जैसी विधा सिख पाए है उस के दम पर अपना गुजर बसेरा कर रहे है I सयाजीराव ने संगीतकारों समर्थन, संगीत को संरक्षण, संगीत शाला की स्थापना, संगीत समारोह और जलसों का आयोजन, ध्वनि संग्रह (रेडियो स्टेशन की स्थापना) इत्यादि महत्वपूर्ण कार्यों से भारतीय संस्कृति को समृद्धि की ओर बढ़ावा मिला I ऐसे दीर्घदृष्टा श्रीमंत महाराजा सयाजीराव को कोटि कोटि नमन I

सन्दर्भ

महेता, आर. सी. (2008). Baroda: A Tale of Two Cities. सर्जन आर्ट गेलरी, वडोदरा
देसाई, चुनीलाल मगन लाल. (1926). वड़ोदरा राज्य नों इतिहास. श्री सयाजी साहित्य माला, वडोदरा
शाह, मूलजीभाई. (1968)भारत ना संगीतरत्नो (भाग 1-2) . राजेंद्र एम. शाह, अहमदाबाद
वसंत. (1968). संगीत विषारद. संगीत कार्यालय, हाथरस
भागवत स्मिता, कन्नान अविनाश.(2005). Maharaja Sayajirao Gaekwad: The Visionary. मातृभूमि सेवा ट्रस्ट, वडोदरा
नायर, शोभना. (1989). Bhatkhande's Contribution to Music. पोपुलर प्रकाशन, मुंबई
नाग,दीपाली.(1985). उस्ताद फैयाज़ खान. संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली
गांधी, पुरुषोत्तम ना. (1939). गुजरात माँ संगीत नु पुनररुज्जीवन. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
देसाई, विभूकुमार शिवराय. (1928). उत्तर हिंदुस्तानी संगीत नो इतिहास. पुस्तकालय सहायक सहकारी मंडल लिमिटेड, वडोदरा